24-6-14 ओम् शान्ति मधुबन

''मीठी मम्मा के पुण्य स्मृति दिवस पर विशेष भोग तथा वतन से प्राप्त दिव्य सन्देश'' (मोहिनी बहन)

आज प्यारी मम्मा के दिन बाबा के पास वतन में पहुँची तो वतन का नज़ारा कुछ ऐसा था, जैसे आज बाबा मम्मा वतन में बैठकर, यज्ञ के आदि रत्नों के साथ कुछ रूहरिहान कर रहे थे। सभी मुरब्बी बच्चे बाबा को घेरकर बैठे हुए थे और बाबा मम्मा की मीठी-मीठी बातें बड़े ध्यान से सुन रहे थे। तो बाबा ने कहा देखो, आज वतन बाबा और मुरब्बी बच्चों का एक सेन्टर बन गया है। यह है आदि रत्नों का ग्रुप और आपके साथ बैठा हुआ है सेवा के आदि रत्नों का ग्रुप।

बाबा यह सीन दिखाकर बच्चों को इशारा दे रहे थे कि बच्चे, देखो बाबा का अव्यक्त पार्ट कितना समय से चल रहा है। यह एडवांस ग्रुप भी अपने अव्यक्त रूप से कितना ज़ोर शोर से सेवायें कर रहा है। व्यक्त भाव से, व्यक्त रूप से सरस्वती का पार्ट तो पूरा हो गया लेकिन अभी दुर्गा का पार्ट शुरू होने वाला है क्योंकि जैसे जैसे समय नज़दीक आता जायेगा, वैसे वैसे अनेक सूक्ष्म विकारों का, आत्माओं का रहा हुआ हिसाब-किताब चुक्तू होगा। जो भटकने वाली आत्मायें हैं उनको भी आप मुक्त करेंगे। तो अभी आप सबकी स्टेज उपराम, शक्तिशाली, बेपरवाह, ज्ञान-योग में मस्त होनी चाहिए। अभी पुरानी दुनिया का कोई भी अंश वंश आपकी अवस्था को टच नहीं करना चाहिए। अपना विकराल रूप (शक्ति रूप) अब सामने हो, जो कोई भी ऐसी आत्मा (निगेटिव भावना वाली) आपके सामने आ न सके, ठहर न सके, ऐसा आप सबको अब पार्ट बजाना है। ऐसे बाबा सभी बच्चों को इशारा दे रहा था।

फिर बाबा बोले अरे, आज तो मम्मा बच्ची का दिन है। मम्मा ने आप सबको बुलाया है, अब आप मम्मा के साथ मिलो जुलो, आपकी मम्मा आपका इंतजार कर रही है। तो वतन में तो आज रिमझिम लगी थी, बाबा तो गुम हो गया। मम्मा और हम सब सखियां रही, तो सबने कहा मम्मा आप बोलो। मम्मा ने कहा बाबा ने इतना इशारा दिया, अब आप सबको उस इशारे को कैच करना है। यह बात भी देखनी है कि आज मधुबन की स्टेज पर कौन है और कौन रहता था! यह समय की सूचना है कि अभी सेकण्ड ग्रुप को अपनी शक्तिशाली अव्यक्त अवस्था में आकर जो इस व्यक्त सृष्टि पर, व्यक्त भाव का पार्ट रहा हुआ है, उसको अच्छी तरह से रेसपॉन्सिबुल होकर बजाना है। फिर मम्मा जैसे एक एक को दृष्टि दे रही थी, तो मम्मा ने कहा आप समय को देखते हो या समय आपको देखता है? अभी आप समय को मत देखो, आप यह दिखाओ कि समय आ गया है। अब आपकी वृत्ति, दृष्टि, कर्म एक एक्जाम्पल रूप में हों, जिससे आपके कर्मों से, जीवन से, विचारों से दूसरों को प्रेरणा मिले। अब बेहद की वैराग्य वृत्ति, बेहद की दृष्टि, बेहद की वृत्ति हो। आपकी स्थिति ही हर परिस्थिति को दूर करने, सामना करने का ऐसा सैम्पल बनें जो आपको कहना न पड़े लेकिन आपको देखकर सब फॉलो करें। तो सब दादियां मम्मा को देखते हुए बोली कि मम्मा हम सबने तो नम्बरवार आपको फॉलो किया है और आज हम आपके साथ वतन में बैठे सूक्ष्म सेवा का पार्ट बजा रहे हैं।

तो मम्मा ने कहा कि अभी जो बच्चे साकार में स्टेज पर हैं, प्रेम स्वरूप तो हैं, धारणा मूर्त भी हैं लेकिन अब प्रेम के साथ, जैसे कहते हैं रमणीकता के साथ, गम्भीरता, वैसे ही प्रेम के साथ-साथ अपना शक्ति स्वरूप भी सामने दिखाई दे। जैसे नयनों से प्रेम दिखाई देता है, ऐसे नयनों से शक्ति रूप भी दिखाई दे जो आगे कोई बात हो ही नहीं। तो अब आप सबको अपने आदि और अनादि स्वरूप में स्थित हो, अपनी जीवन से सबको बाबा मम्मा का अनुभव कराना है।

फिर मैं मधुबन से जो भोग लेकर गई थी, वो सबके आगे रखा। बाबा भी आ गया, सबने भोग देखा, भोग स्वीकार किया। बाबा ने कहा देखो बच्चों का मम्मा से कितना स्नेह है, कितनी भावना है, कितना प्यार से भोग बनाया है। फिर मम्मा बाबा ने, सभी दादियों ने आप सबको बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार दी। मैंने भी आप सबकी यादप्यार दी। (निर्वैर भाई की भी याद दी, भोग के समय साथ में बैठे हैं) तो बाबा मम्मा दादी ने निर्वैर भाई को भी याद देते कहा कि निर्वैर बच्चा यहाँ मम्मा बाबा की पालना लिए हुए बैठा है, तो निर्वैर बच्चे को कहना आपको बाबा मम्मा का जो अनुभव है, उस अनुभव के आधार से आप दूसरों को भी ऐसा ही शक्तिशाली और प्रेम स्वरूप दोनों के बैलेंस का अनुभव कराओ। शरीर तो अपना काम करता रहेगा लेकिन आप ऐसी एक शक्तिशाली सेना बनाओ, क्योंकि अन्त के समय में कई बातें होंगी लेकिन साक्षी होकर उन बातों को समाप्त करना है। ऐसे सबके प्रति यादप्यार लेते मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा, ओम् शान्ति।